व्यापार की योजना

पर

आय सृजन गतिविधि

वर्मीकम्पोस्टिंग

के लिए

स्वयं सहायता समूह – गायत्री

एसएचजी/सीआईजी नाम	गायत्री
वीएफडीएस नाम	गायत्री माता(ठंडोल)
श्रेणी	डरोह
विभाजन	पालमपुर

के तहत तैयार-

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना
(जायका सहायता प्राप्त)

<u>विषयसूची</u>

क्र.सं.	विवरण	पेज नंबर
1.	परिचय	3
2.	एसएचजी/सीआईजी का विवरण	4
3.	लाभार्थियों का विवरण	5
4.	गांव का भौगोलिक विवरण	5
5.	बाजार की संभावना	6
6.	कार्यकारी सारांश	6
7.	आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण	7
8.	उत्पादन प्रक्रिया का विवरण	7
9.	स्वोट अनालिसिस	7
10.	प्रबंधन का विवरण सदस्यों	8
11।	अर्थशास्त्र का विवरण	8-10
12.	स्वयं सहायता समूह में निधि प्रवाह व्यवस्था	10
13.	निधि के स्रोत	10-11
14.	प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन उन्नयन	11
15.	ब्रेक-ईवन बिंदु की गणना	11
16.	बैंक ऋण चुकौती	11
17.	निगरानी विधि	12
18.	टिप्पणी	12
19.	समूह सदस्य की तस्वीरें	१३
20.	समूह फोटो	14
21.	संकल्प-सह-समूह सर्वसम्मति प्रपत्र	15
22.	वीएफडीएस और डीएमयू द्वारा व्यावसायिक अनुमोदन	16

1. परिचय-

अर्ध-व्यावसायिक इकाई में साधारण ईंटों से बने वर्मीकम्पोस्टिंग टैंक। वर्मीकम्पोस्टिंग के मॉडल में एक दीवार (1.2 मीटर चौड़ाई, 3.60 मीटर लंबाई और 0.75 मीटर ऊंचाई) से घिरे तीन कक्ष होते हैं। दीवारें अलग-अलग सामग्रियों जैसे सामान्य ईंटों, खोखली ईंटों, एस्बेस्टस शीट और स्थानीय रूप से उपलब्ध चट्टानों से बनी होती हैं। इस मॉडल में छोटे-छोटे छेदों वाली विभाजन दीवारें होती हैं, ताकि केंचुओं को एक कक्ष से दूसरे कक्ष में आसानी से ले जाया जा सके। प्रत्येक कक्ष के एक कोने में हल्की ढलान के साथ एक आउटलेट प्रदान करने से अतिरिक्त पानी को इकट्ठा करने में आसानी होती है, जिसे बाद में दोबारा इस्तेमाल किया जाता है या फसल पर केंचुआ लीचेट के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। एक टैंक के तीन घटक एक के बाद एक पौधों के अवशेषों से भरे जाते हैं। पहले कक्ष को परत दर परत गाय के गोबर से भरा जाता है और फिर केंचुओं को छोड़ा जाता है। फिर दूसरे कक्ष को परत दर परत भरा जाता है। एक बार जब पहले कक्ष की सामग्री संसाधित हो जाती है, तो केंचुए कक्ष 2 में चले जाते हैं, जो पहले से ही भरा हुआ होता है और केंचुओं के लिए तैयार होता है। इससे पहले कक्ष से सड़ी हुई सामग्री को इकट्ठा करना आसान हो जाता है और कटाई और केंचुओं को डालने के लिए श्रम की भी बचत होती है। इस तकनीक से श्रम लागत कम होती है और पानी के साथ-साथ समय की भी बचत होती है।

विभिन्न आयु वर्ग की 8 महिलाओं का एक समूह जेआईसीए परियोजना के अंतर्गत एक स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए एक साथ आया और एक व्यवसाय योजना तैयार करने का निर्णय लिया, जो उन्हें इस आईजीए को सामूहिक रूप से लेने और अपनी अतिरिक्त आय बढ़ाने में मदद कर सके।

इस IGA (आय सृजन गतिविधि) में शामिल होने से पहले बाजार की संभावनाओं और विभिन्न पहलुओं पर बहुत सावधानी से चर्चा करने के बाद और इसके अलावा वन विभाग के रेंज फॉरेस्ट ऑफिसर और SHG के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाएंगे, ताकि नर्सरी में उपयोग के लिए SHG द्वारा उत्पादित अच्छी गुणवत्ता वाले वेमीकम्पोस्ट की खरीद की जा सके। गायत्री SHG का गठन वर्ष 2022 में किया गया था और इसे हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका (JICA असिस्टेड)के सुधार के लिए परियोजना के तहत भी शामिल किया गया है, जो VFDS गायत्री माता (थंडोल) के अंतर्गत आता है।

इस SHG में 7 महिलाएँ हैं। इस परियोजना के वित्तपोषण, प्रशिक्षण और सहायता से वे इस कौशल को विकसित कर सकेंगे और वे बड़े पैमाने पर वर्मी-कम्पोस्ट बेच सकेंगे और आत्मनिर्भर होकर आय अर्जित कर सकेंगे। इस एसएचजी की विस्तृत व्यावसायिक योजना इसकी निवेश क्षमता, विपणन और प्रचार रणनीति के अनुसार तैयार की गई है और विस्तृत कार्य योजना पर नीचे चर्चा की जाएगी:

2. एसएचजी/सीआईजी का विवरण:

1.एसएचजी/सीआईजी	गायत्री
2.वीएफडीएस	गायत्री माता (ठंडोल)
3.श्रेणी	डरोह
4.विभाजन	पालमपुर
5.गाँव	ठंडोल
6.अवरोध पैदा करना	भवारना
7.ज़िला	कांगड़ा
8.एसएचजी में सदस्यों की कुल संख्या	7
9.गठन की तिथि	अगस्त-2022
10.बैंक खाता सं.	50074982828
11.बैंक विवरण	केसीसी बैंक (पहरा) और आईएफएससी: केएसीई0000171
12.एसएचजी/सीआईजी मासिक बचत	(100 प्रति व्यक्ति)
13.कुल बचत	700
14.कुल अंतर ऋण	-
15.नकद क्रेडिट सीमा	-
16.पुनर्भुगतान स्थिति	-

3. लाभार्थियों का विवरण :

क्र.सं.	नाम	एम/एफ	पिता/पति का नाम	वर्ग	पद का नाम	संपर्क नंबर।
1	बबीता कुमारी	एफ	राजेश चंद	सामान्य	अध्यक्ष	98059-23678
2	अरुणा कुमारी	एफ	जगजीत सिंह	सामान्य	सचिव	78761-16950
3	अमिता मेहता	एफ	कारन सिंह	सामान्य	सदस्य	98167-28880
4	माया देवी	एफ	रमेश कुमार	सामान्य	सदस्य	88943-15269
5	बबली देवी	एफ	रामदास	अनुसूचित जाति	सदस्य	78073-69312
6	पूजा	एफ	रविंदर कुमार	अन्य पिछड़ा वर्ग	सदस्य	98050-36062
7	शीला	एफ	देवेन्द्र सिंह	सामान्य	सदस्य	98166-36221

5.बाजार की संभावना-

कृषि में रासायनिक खादों के पूरक और प्रतिस्थापन के रूप में वर्मी-कम्पोस्ट एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में उभर रहा है। वर्मी-कम्पोस्ट, जिसे 'किसानों का मित्र' भी कहा जाता है, का उपयोग सामान्य फसलों और बागानी फसलों के लिए किया जाता है। यह टिकाऊ कृषि और बंजर भूमि विकास के लिए एक मूल्यवान इनपुट है। यह वृद्धि को बढ़ावा देता है और पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक हार्मोन प्रदान करने में सहायक है। किसानों के बीच वर्मी-कम्पोस्ट की बहुत मांग है क्योंकि इसके उपयोग से कृषि उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ती है और इसकी कीमत भी सस्ती होती है। इसका उपयोग गमलों में खेती और घरेलू बगीचों में भी व्यापक रूप से किया जाता है। इसके अलावा, कृषि, वन और बागवानी सहित कई सरकारी विभाग इसे थोक में खरीदते हैं। सरकारी एजेंसियां और गैर सरकारी संगठन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जागरूकता अभियान और फिल्म शो आयोजित करके वर्मी-कम्पोस्ट का उपयोग करके जैविक कृषि को लोकप्रिय बना रहे हैं। अच्छी गुणवत्ता वाले वर्मी-कम्पोस्ट का उत्पादन करने का कौशल सीखने के बाद, गायत्री एसएचजी वन विभाग की नर्सरियों और निजी नर्सरियों को लक्षित करेगा। रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक खाद का उपयोग करने और जैविक खेती को बढ़ावा देने के लाभों के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ बाजार की अपार संभावनाएं हैं।

1	संभावना बाज़ार स्थान/स्थान	दुहकी एवं शिव नगर नर्सरी एवं खुले बाजार में भी.
2	सिलाई कार्य की मांग	साल भर।
3	प्रक्रिया का पहचान का बाज़ार	समूह के सदस्य आस-पास के लोगों से संपर्क करेंगे ग्रामीणों/परिवारों/संस्थाओं।
4	विपणन रणनीति	स्वयं सहायता समूह के सदस्य सीधे तौर पर आदेश (व्यक्तिस्तर/समूह स्तर)से आस-पास के ग्रामीणों/घरों/संस्थाओं से संपर्क करें।

6.कार्यकारी सारांश-

इस स्वयं सहायता समूह द्वारा वर्मीकंपोस्टिंग (आय सृजन गतिविधि) का चयन किया गया है। इस स्वयं सहायता समूह की सभी महिलाओं द्वारा व्यक्तिगत गड्ढे बनाकर IGA का संचालन किया जाएगा। सदस्यों के बीच श्रम विभाजन की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई है क्योंकि वे व्यक्तिगत रूप से काम कर रहे हैं ताकि प्रत्येक IGA को मजबूत करने और अतिरिक्त धन प्राप्त करने में योगदान दे।

7.आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण-

1	उत्पाद का नाम	वर्मी कम्पोस्ट
2	उत्पाद पहचान की विधि	समूह के सदस्यों द्वारा निर्णय लिया गया है
3	SHG/CIG/क्लस्टर सदस्यों की सहमति	हाँ

8.उत्पादन प्रक्रियाओं का विवरण-

- वर्मीकम्पोस्टिंग सामग्री: पशुओं का मलमूत्र, रसोई का कचरा, खेत के अवशेष और जंगल के कूड़े जैसे अपघट्य जैविक कचरे का आमतौर पर खाद बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। आम तौर पर, पशुओं का गोबर (ज्यादातर गाय का गोबर) और सूखे कटे हुए फसल अवशेष मुख्य कच्चे माल होते हैं। मिश्रण फलीदार गैर फलीदा फसल अवशेष समृद्ध करते है गुणवत्ता केंचुआ खाद। लाल केंचुआ (ईसेनिया फेटिडा) केंचुओं की पसंदीदा प्रजाति है क्योंकि इसकी उच्च गुणन दर है और इस प्रकार यह 45-50 दिनों के भीतर कार्बनिक पदार्थों को केंचुआ खाद में बदल देता है। चूंकि यह सतह पर उगने वाला होता है इसलिए यह ऊपर से कार्बनिक पदार्थों को केंचुआ खाद में बदल देता है।
- वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने की प्रक्रिया:वर्मीकंपोस्टिंग या तो बिस्तर या गड्ढे विधि द्वारा किया जाता है। बिस्तर विधि में खाद बनाने का काम पक्के/कच्चे फर्श पर जैविक मिश्रण का बिस्तर बनाकर किया जाता है जबकि गड्ढे विधि में यह सीमेंट वाले गड्ढों में किया जाता है।

• वर्मीकंपोस्टिंग इकाई ठंडी, नम और छायादार जगह पर होनी चाहिए

• गाय के गोबर और कटी हुई सूखी पत्तियों को 3:1 के अनुपात में मिलाकर 15-20 दिनों तक आंशिक विघटन के लिए रखा जाता है। • क्यारी के तल पर कटी हुई सूखी पत्तियों/घास की 15-20 सेमी की परत बिछाई जानी चाहिए।

• आंशिक रूप से विघटित सामग्री के 6x2x2 फीट आकार के बिस्तर बनाए जाने चाहिए।

• प्रत्येक बेड में 1.5-2.0 क्विंटल कच्चा माल होना चाहिए तथा कच्चे माल की उपलब्धता और आवश्यकता के अनुसार बेडों की संख्या बढ़ाई जा सकती है।

• लाल केंचुए (1500-2000) को बिस्तर की ऊपरी परत पर छोड़ा जाना चाहिए। • कीड़ों के निकलने के तुरंत बाद पानी का छिड़काव करना चाहिए

• क्यारियों को प्रतिदिन पानी छिड़ककर तथा बोरे/पॉलीथीन से ढककर नम रखा जाना चाहिए।

• वायु संचार बनाए रखने और उचित अपघटन के लिए बिस्तर को 30 दिनों के बाद एक बार पलट देना चाहिए।

• खाद 45-50 दिनों में तैयार हो जाती है। तैयार उत्पाद कच्चे माल का 3/4 होता है।

➢ कटाई:जब कच्चा माल पूरी तरह से सड़ जाता है तो वह काला और दानेदार दिखाई देता है। खाद तैयार होने पर पानी देना बंद कर देना चाहिए। खाद को आंशिक रूप से सड़ी हुई गाय के गोबर के ढेर पर रखना चाहिए ताकि केंचुए खाद से गोबर में चले जाएं। दो दिन बाद खाद को अलग करके छानकर इस्तेमाल किया जा सकता है।

1	समय लिया	यह माना जाता है कि पहले वर्ष में उत्पादन के लगभग 2-3 चक्र होंगे और अगले वर्ष 5-6 चक्र होंगे। आगामी वर्षों में 100 से अधिक चक्र होंगे, जिनमें से प्रत्येक चक्र की अवधि लगभग 65-70 दिन होगी।
2	शामिल महिलाओं की संख्या	सभी महिलाएं
3	कच्चे माल का स्रोत	स्थानीय बाजार/मुख्य बाजार
4	अन्य संसाधनों का स्रोत	स्थानीय बाजार/मुख्य बाजार
5	प्रति चक्र अपेक्षित उत्पादन	8 गड्ढों से प्रति चक्र 80 क्विंटल (प्रत्येक गड्ढे से 10 क्विंटल)
6	प्रति वर्ष अपेक्षित उत्पादन	240 क्विंटल प्रति वर्ष।

9.SWOT विश्लेषण-

- ताकत-
  - उनके खेतों पर कच्चा माल आसानी से उपलब्ध है।
  - विनिर्माण प्रक्रिया सरल है
  - उचित पैकिंग और परिवहन में आसान
  - परिवार के अन्य सदस्य भी लाभार्थियों का सहयोग करेंगे
  - उत्पाद का स्वयं-जीवन लंबा है।
  - भारतीय किसानों के सामने बांझपन और मृदा अपरदन मुख्य समस्याएं हैं, वर्मी कम्पोस्ट के उपयोग से मृदा संरचना, बनावट, वायु संचार, जल धारण क्षमता में सुधार होता है तथा मृदा अपरदन को रोका जा सकता है।
  - यह आसानी से अपनाई जाने वाली कम लागत वाली प्रौद्योगिकी है।
  - रासायनिक उर्वरकों की तुलना में सस्ती कीमत।
    - इस खाद का उपयोग करके तैयार की गई फसलों की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत मांग है। इस फसल की बिक्री कीमत भी अच्छी मिलती है।
    - मीडिया राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्मी-कम्पोस्ट के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा कर रहा है
- कमजोरी
  - तकनीकी जानकारी का अभाव।
  - विनिर्माण प्रक्रिया/उत्पाद पर तापमान, आर्द्रता, नमी का प्रभाव।
  - प्रारंभिक स्तर पर इसके प्रयोग से उत्पादन लागत बढ़ जाती है।
  - लोगों में जागरूकता कम है।
  - उत्पादन के प्राकृतिक तरीके के कारण, हम उत्पादन समय को कम नहीं कर सकते।
- अवसर
  - जैविक और प्राकृतिक खेती के प्रति किसानों में जागरूकता के कारण वर्मी कम्पोस्ट की मांग बढ़ रही है।
  - एचपी वन के साथ विपणन गठजोड़ की संभावना।
  - घरेलू रसोई से बचे हुए कचरे सहित जैविक कचरे का सर्वोत्तम उपयोग।
  - लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति अधिक चिंतित हैं इसलिए वे जैविक भोजन खाना चाहते हैं।
  - देश के शहरों में सैकड़ों टन बायोडिग्रेडेबल जैविक कचरा फेंका जा रहा है, जिससे निपटान की समस्या पैदा हो रही है। इस कचरे को कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल करके मूल्यवान खाद में बदला जा सकता

- इस इकाई को शुरू करने के लिए किसानों को सरकार द्वारा वैध समर्थन।
- बाजार में प्रतिस्पर्धियों की अनुपस्थिति उत्पादकों के लिए एक बड़ा अवसर हो सकता है।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक दायरा।

❖ खतरे और जोखिम

- प्रतिस्पर्धी बाजार
- प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण और कौशल उन्नयन में भागीदारी के प्रति लाभार्थियों में प्रतिबद्धता का स्तर।
- अत्यधिक मौसम की स्थिति के कारण उत्पादन चक्र टूटने की संभावना।
- कुछ छोटे खिलाड़ियों ने इसकी प्रारंभिक अवस्था में ही इसकी छवि को बिगाड़ दिया है।
- 90% किसान रासायनिक खाद का उपयोग कर रहे हैं। किसान अपनी खेती को जैविक बनाने के लिए पहल नहीं करते।

10. सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण

- उत्पादन -कच्चे माल की खरीद सहित इसका ध्यान व्यक्तिगत सदस्यों द्वारा रखा जाएगा
- गुणवत्ता आश्वासन– सामूहिक रूप से
- सफाई और पैकेजिंग– सामूहिक रूप से
- विपणन– सामूहिक रूप से
- इकाई की निगरानी– सामूहिक रूप से

11. अर्थशास्त्र का विवरण:

ए. पूंजीगत लागत				
क्र.सं.	आइटम का विवरण	मात्रा	यूनिट मूल्य	मात्रा
	भूमि और भवन			
1	वर्मीकम्पोस्ट गड्ढे की लागत अनुमान के अनुसार। वर्मीकम्पोस्ट बेड (3.60 मी*1.20 मी*7 नग = 30 मी2 + 5 मी 2 मार्ग/उपयोगिता =35 मी2)	7	22400	156800
	उप योग			156800
	उपकरण और मशीनरी			
1	फावड़े, कुदाल, बाल्टी, बांस की टोकरियाँ, कुदाल,	7	1200	8400
4	3 तार जाल छलनी के साथ हाथ संचालित छलनी- 0.6 मीटर x 0.9 मीटर आकार.	7	1000	7000
5	डिजिटल वजन मशीन	1	4000	4000
7	बेग सीलिंग मशीन	1	6000	6000
8	कल्चर ट्रे (प्लास्टिक) (35 सेमी x 45 सेमी) - 1 नग	1	800	800
	उप योग			26200
	पानी का प्रावधान - पानी का डिब्बा	7	500	3500
	केंचुए (कुल कीमत 1 किलोग्राम प्रति घनमीटर तथा 100 रुपये प्रति किलोग्राम) उपयोगित बिस्तर आयतन = 35m3)	35	150	5250
	कुल पूंजी लागत			191750

नोट – समूह के सदस्य स्वयं कार्य करेंगे, इसलिए श्रम लागत इसमें शामिल नहीं की गई है तथा सदस्य आपस में कार्यसूची का प्रबंध करेंगे।

शुद्ध आवर्ती लागत = कुल आवर्ती लागत - श्रमिक मजदूरी
= 50647-4000
= 46647

बी. आवर्ती लागत				
क्र.सं.	आइटम का विवरण	मात्रा	यूनिट मूल्य	मात्रा
1	कृषि अपशिष्ट (लागत, संग्रहण एवं परिवहन) @ 320 किग्रा प्रति एमउ एवं रु.200/एमटी (3.6*1.2*0..75*7*4*320*200/1000)	58.06	200	11612
2	गाय का गोबर (लागत, संग्रहण एवं परिवहन) @ 80 किग्रा/एमउ एवं रु.250/एमटी (3.6*1.2*0..75*7*4*80*250/1000)	18.14	250	4535
3	कृषि अपशिष्ट, गोबर और कीड़ों से वर्मीबिड बनाने, पानी देने, हिलाने, कटाई करने, छानने, पैकिंग आदि में दैनिक आधार पर मजदूरी, बैग की लागत सहित (250 मीटर प्रति दिन @ 200 रुपये)	4	4000	4000
4	मरम्मत और रखरखाव	7	1000	7000
5	बैग और पैकेजिंग की लागत	940	25	23500
	कुल आवर्ती लागत			50647

सी. उत्पादन लागत (मासिक)		
क्र. सं.	विवरण	मात्रा
1	कुल आवर्ती लागत	50647
2	पूंजीगत लागत पर 10% वार्षिक मूल्यह्रास	19175
कुल =91140/-		

D. विक्रय मूल्य की गणना			
क्र.सं.	विवरण	इकाई	मात्रा
1	बनाने की किमत		800-1000

12. लागत लाभ विश्लेषण (चक्र)

लागत लाभ विश्लेषण (चक्र)		
क्र.सं.	विवरण	मात्रा
1	पूंजीगत लागत पर 10% वार्षिक मूल्यह्रास	19175
2	शुद्ध आवर्ती लागत	46647
3	प्रति चक्र कुल बैग (50 किग्रा)	940
4	1 बैग का विक्रय मूल्य	लगभग रु.450
5	आय पीढ़ी	423000
6	शुद्ध लाभ (आय सृजन - शुद्ध आवर्ती लागत)	376353
7	शुद्ध लाभ का वितरण	✓ लाभ को मासिक/वार्षिक आधार पर सदस्यों के बीच समान रूप से वितरित किया जाएगा। ✓ लाभ का उपयोग आईजीए में आगे निवेश के लिए किया जाएगा

13.स्वयं सहायता समूह में निधि प्रवाह व्यवस्था -

क्र.सं.	विवरण	कुल राशि(रु.)	परियोजना योगदान	स्वयं सहायता समूह योगदान
1	कुल पूंजी लागत	1,91,750	1,43812	47938
2	कुल आवर्ती लागत	46647	0	46647
3	प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन उन्नयन.	50,000	50,000	0
कुल		288397	193812	94585

टिप्पणी:

i) पूंजीगत लागत- चूंकि समूह महिलाओं का है और वे गरीब हैं, इसलिए 75% पूंजीगत लागत परियोजना द्वारा वहन की जाएगी तथा 25% स्वयं सहायता समूह द्वारा वहन की जाएगी।

ii) आवर्ती लागत- स्वयं सहायता समूह द्वारा वहन की जाएगी।

iii) प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन का खर्च परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा।

14. निधि के स्रोत -

परियोजना समर्थन	✧ यदि सदस्य सामान्य श्रेणी के अलावा अन्य श्रेणी के हैं तो परियोजना द्वारा पूंजी लागत का 75% वहन किया जाएगा। यदि सदस्य सामान्य श्रेणी के हैं तो परियोजना द्वारा पूंजी लागत का 50% वहन किया जाएगा। ✧ स्वयं सहायता समूह के बैंक खाते में 1 लाख रुपए तक की धनराशि जमा की जाएगी। ✧ प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन लागत। ✧ 5% ब्याज दर की सब्सिडी सीधे डीएमयू द्वारा बैंक/वित्तीय संस्थान में जमा की जाएगी और यह सुविधा केवल तीन वर्षों के लिए होगी। स्वयं सहायता समूह को मूलधन की किश्तें स्वयं जमा करानी होंगी। नियमित आधार पर राशि।	खरीद मशीनों/उपकरणों इच्छाहोन हो द्वारा संबंधित डीएमयू/एफसीसीयू सभी औपचारिकताओं का पालन करने के बाद।
स्वय सहायता समूह योगदान	✧ सामान्य श्रेणी और अन्य श्रेणियों में क्रमश: सभी सदस्य महिलाएं हैं और निम्न आय वर्ग से हैं तथा वे 25% योगदान दे सकती हैं तथा परियोजना को शेष 75% वहन करना होगा। ✧ आवर्ती लागत स्वयं सहायता समूह द्वारा वहन की जाएगी।	

15.प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन -

प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन लागत परियोजना द्वारा वहन की जाएगी। निम्नलिखित कुछ प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन प्रस्तावित/आवश्यक हैं:

- कच्चे माल की लागत प्रभावी खरीद
- गुणवत्ता नियंत्रण
- पैकेजिंग और विपणन
- वित्तीय प्रबंधन

16.ब्रेक-ईवन बिंदु की गणना -

= पूंजीगत व्यय/(विक्रय मूल्य (प्रति बैग)-उत्पादन लागत (प्रति बैग))

=191750/ (500-250)

= 767

इस प्रक्रिया में 774 बैगों के उत्पादन के बाद ब्रेक-ईवन हासिल किया जाएगा।

17. बैंक ऋण चुकौती-

यदि ऋण बैंक से लिया गया है तो यह नकद ऋण सीमा के रूप में होगा और सीसीएल के लिए कोई

:

ह

21: समूह तस्वीरें:

22. संकल्प-सह समूह सहमति प्रपत्र.

Revised

Resolution-cum-Group-consensus Form

It is decided in the General house meeting of the group Gayati held on 03-08-24 at Gayatri Mata Thandol that our group will undertake the Vermicompost as livelihood Income Generation Activity under the Project for Implementation of Himachal Pradesh Forest Ecosystem management and Livelihood (JICA assisted).

प्रधान गायत्री स्वयं सहायता समूह ठन्डोल

Signature of group President

Aruna Kanori

सचिव गायत्री स्वयं सहायता समूह ठंडोल

Signature of group secretary

प्रधान

ग्राम पंचायत मलाहू

तहसील पालमपुर

जिला कांगड़ा हि० प्र०

Signature of President VFDS

23. VFDS और DMU द्वारा व्यावसायिक स्वीकृति

Revised

Business Plan Approval by VFDS and DMU

Gayatri Group will undertake the Vermicompost as Livelihood Income Generation Activity under the Project for Implementation of Himachal Pradesh Forest Ecosystem Management and Livelihood (JICA assisted). In this regard business Plan of Amount Rs. 288397 has been submitted by the group on 03-08-24 and the business plan has been approved by VFDS Gayatri Mata Thandol.

Business Plan is submitted to DMU through FTU for further action please.

Thank You.

Signature of group President — प्रधान, गायत्री स्वयं सहायता समूह, ठन्डोल

Signature of group Secretary — सचिव, गायत्री स्वयं सहायता समूह, ठंडोल

Signature of President VFDS — प्रधान, ग्राम पंचायत मलाहू, तहसील पालमपुर, जिला कांगड़ा हि० प्र०

Approved

DMU cum DFO Palampur